IOSR Journal Of Humanities And Social Science (IOSR-JHSS)
Volume 23, Issue 7, Ver. 1 (July. 2018) PP 73-75
e-ISSN: 2279-0837, p-ISSN: 2279-0845.
www.iosrjournals.org

निराला स्वाधीनता के कवि

डॉ0 विनीता रानी
एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग
के0 जी0 के0 पी0 जी0 कॉलेज, मुरादाबाद उत्तर प्रदेश

निरालाः स्वाधीनता के कवि मुनष्य की आत्मचेतना के विकास के लिए स्वाधीनता अनिवार्य है। किसी व्यक्ति के लिए स्वाधीनता का अर्थ है जो अपने 'स्व' के अधीन हो, जिस पर किसी दूसरे का नियंत्रण न हो, जिस पर किसी दूसरे का अधिकार न हो जब व्यक्ति पर किसी दूसरे का वष, अधिकार या नियंत्रण नहीं होगा स्वंय की आत्मा बुद्धि और चेतना से संचालित होगा, वही सत्य होगा, वही उदात्त होगा, वही यथार्थ होगा।

स्वाधीन चेतना का एक अर्थ और भी है कि वह कहीं न कहीं बंधा भी रहे, आत्मनियंत्रित रहे। अनियंत्रित स्वाधीनता मानवीय मूल्यों को नष्ट कर समाज और देष का विनाष कर सकती है।

स्वाधीनता में अधिकारों का होना आवष्यक है। बिना अधिकरों के स्वाधीनता केवल नाममात्र की स्वीधनता रह जायेगी और इसका कोई महत्व नहीं होगा। अतएव प्रत्येक राज्य का, शासन व्यवस्था का यह कर्तव्य हो जाता है कि वह अपने नागरिकों को उन सुविधाओं और

अधिकारों को प्रदान करे, जो कि आज सभ्य तथा सुसंस्कृत जीवन के लिए परामावष्यक है। स्वाधीनता से तात्पग्र वर्तमान युग में केवल राजनीतिक स्वतंत्रता ही नहीं वरन् सांस्कृतिक; धार्मिक, सामाजिक तथा आर्थिक स्वाधीनता भी है। बिना सांस्कृतिक स्वाधीनता के मानसिक तथा आध्यात्मिक विकास सम्भव नहीं है। बिना मानसिक तथा आध्यात्मिक विकास के व्यक्तित्व का पूर्ण विकास संभव नहीं है। परन्तु राजनैतिक तथा सांस्कृतिक है कि प्रत्येक व्यक्ति को आर्थिक स्वाधीनता भी प्राप्त हो। जिस व्यक्ति को हर समय अपने उदर–पूर्ति की ही चिन्ता रहेगी, जो अपने परिवार को उचित रूप से भरण–पोषण नहीं कर सकता है, उसके लिए राजनैतिक तथा सांस्कृतिक स्वाधीनता अर्थहीन है। व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यक्तित्व के पूर्ण विकास के लिए सामाजिक, धार्मिक एवं आर्थिक स्वाधीनता भी आवष्यक है। निराला ने स्वेदषी आन्दोलन के वातावरण में होष संभाला था। पराधीनता की पीड़ा, स्वाधीनता की आकांक्षा, ब्रिटिष साम्राज्यवाद के विरूद्ध आक्रोष और स्वाधीनता के लिए संघर्ष के प्रति गहरी सहानुभूति उनकी आरम्भिक रचनाओं में मिलने लगती है। उनकी पहली प्रकाषित कविता है। जन्म भूमि (1920)

पंचसिन्धु ब्रहममपुत्र रवितनया गंगा।
विन्ध्य विपित राजे ध–धेरि युग जंघा।।
बधिर विष्व चकित गीत सुन भैरव वाणी।
जन्मभूमि मेरी है जगन्महारनी।।

निराला की रचनात्मक ऊर्जा का विकास जिन वर्ष में हुआ वह मुख्यतः कॉग्रेस और ब्रिटिष राज के बीच घोर संघर्ष का समय है। निराला आरम्भ से ही आजादी के विचार से भावनात्मक स्तर पर बहुत उद्वेलित दिखाई पड़ते है। इस उद्वेन में कभी उनकी अनुभूतियां उच्छल मातृ–वन्दना का रूप लेती हैं तो कभी राम, तुलसी, और षिवाजी के माध्यम से गुलामी से मुक्ति का स्वप्ल देखते हुए सम्पूर्ण भारतीय जन–मानस को जगाने और उठ खड़े होने के लिए ललकारती हैं डॉ0 राम विलास शर्मा निराला की साहित्य साधना में लिखा कि निराला के लड़कपन में बंग–भांग विरोधी स्वदेषी आन्दोलन देखा, उन्होंने उन वीर युवकों की कहानियाँ पढ़ी एवं सुनी जिन्होंने सषस्त्र क्राँति के द्वारा भारत को मुक्त कराने के प्रयास में अपने प्राण त्याग दिये उन्होंने सन् 1920 और 1930 में स्वाधीनता आन्दोलन के नये उभर देखे जिनमें भारतीय जनता ने व्यापक रूप से भाग लिया। उन्होंने स्वंय अपने जिले के किसानों को संगठित करने में योगदान दिया और उनके संघर्षों का नेतृत्व किया। निराला भारतीय और विष्वराजनीति के बारे में जो सामग्री मिलती थी उसे ध्यान से पढ़ते थे, जो देखते–सुनते थे उसे पढ़ी हुई सामग्री से तुलना करते थे फिर अंग्रेजी राज और भारत के बारे मं अपने निष्कर्ष निकालते थे। तब स्वधीनता–प्रेम उनके साहित्य की प्रेरणा हो तो आष्चये नहीं'' निराला छायावादी कवि होते हुए प्रगतिषील रचनाकार भी है। निराला किसी राजनीतिक दल से जुड़े नहीं थे, वे प्रगतिषील मानवतावादी विचाराधारा के समर्थक जरूर था। वे साम्राज्यवाद, पूँजीवाद एवं सामन्तवाद के प्रबल विरोधी थे। भारत ब्रिटिष साम्राज्य के अधीन एक गुलाम देष था। निराला देष की स्वाधीनता संग्राम में कूदने के लिए नौजवानों को प्रोत्साहित करते हैं 'जागो फिर एक बार' कविता में वे देषवासियों का आहवान करते हैं– जागों फिर एक बार समर अमर कर प्राण गान गये महासिन्धु से सिन्धु–नद तीरवासी निराला ऐतिहासिकता का सहारा लेते हुए देषवासियों में राष्ट्र–गौरव का मान बढ़ाते हैं, स्वाधीनता की प्रेरण देते है। ''महाराज षिवाजी का पत्र' जैसी रचना में ऐतिहासिक संदर्भ होते हुए भी आधुनिक देष–दषा का स्पष्ट आकलन है। निराला ने अपने ओजस्वी कण्ठ से अंसख्य श्रोताओं में राष्ट्र दर्प और वीर रस का संचार किया प्रोत्साहन देकर और प्रष्न भरे शब्दों में जन–मन को उद्वेलित करते हुए वे कहते हैं–

सोचों तुम!
उठती है जब नग्न तलवार स्वतंत्रता की कौन वह समेरू रेण–रेण जो न हो जाय इसीलिए दुजय हमारी शक्ति!

सामाजिक स्तर से लेकर पूरे राष्ट्र में परस्पर मतभेद के कारण पराधीनता का अस्तित्व हर जगह विद्यमान हैं अपने युवा की पराधीनता के कारण की और संकेत करते हैं– व्यक्तिगत भेद ने छीन ली हमारी शक्ति निराला की राष्ट्रीयता भारत की इस मिट्टी में उगती, पनपती है, परन्तु इसमें प्रफुल्लित और पल्लवित होती हुई बहुत दूर जाकर वह समस्त मानवता में अपने को समेट लेती है, इसलिए उनकी राष्ट्रीयता कविता का धरातल बड़ा विस्तृत और बहुरंगी। है।

निराला साम्राज्यवाद के प्रबल विरोधी थे क्योंकि वे जानते थे कि अंग्रेजी साम्राज्यवाद भारत को राजनीतिक और आर्थिक रूप से गुलाम बनाकर इसके साधनों का अपने (ब्रिटेन) हित में प्रयोग कर रही है। निराला कहते है कि साम्राज्यवाद इंग्लैण्ड की राजनीति का मूल है। पूँजी के द्वारा वणिक शक्ति की वृद्धि के इतिहास के साथ–साथ साम्राज्यवाद का इतिहास इंग्लैण्ड के साथ–साथ का समस्त संसार पर प्रभाव है साथ–साथ अपनी वृत्ति या जातीय साम्राज्यवाद के कारण इंग्लैण्ड संसार भर में बदनाम है। इतिहास के जानकार जानते हैं कि इंग्लैण्ड की संसार पूँजीपतियों की सरकार है और साम्राज्यवाद की जीवन शक्ति, का मूल आधार है। निराला निरन्तर अपनी कविताओं में साम्राज्यवादी तथा सामन्ती और पूँजीवादी शक्तियों की सॉठ–गॉठ को चिन्हित करते रहे हैं, और इन शक्तियों की पहचान कर उनपर लगातार व्यंग्य–प्रहार किया। निराला ने 'कुकुरमुत्ता' के जरिये देष और समाज की तत्कालीन आर्थिक तथा राजनीतिक स्थितियों पर गहरा व्यंग्य किया था। पूँजीवादी सत्ता और व्यवस्था पर चोट करती उनकी पँक्तियों–

अबे सुन बे गुलाब।
भूल मत जो पायी खुषबू रंगो आ
खून चूसा खाद का तूने अषिष्ट
डाल पर इतराता है कैपीटलीस्ट।

इन पंक्तियों में गुलाब को पूँजीवादी शक्तियों का प्रतीक मानकर जो बातें कही गयी हैं ये सभी तत्कालीन ही नहीं, वरन् किसी भी समय की जन–विरोधी शोषक सत्ता और व्यवस्था के वर्गीय चरित्र को उजागर करती हैं।

निराला ने राष्ट्रीय चेतना के निर्माण में युगान्तकारी भूमिका भी एक साहित्यिक के रू‍प में निभाई। राष्ट्रीय आन्दोलन कुछ लोगों के लिए अंग्रेजों को हटाने भर का अन्दोलन था, किन्तु निराला का विचार इससे भिन्न था। उनकी समझ में एक व्यापक सामाजिक क्रॉति न केवल इसलिए आवष्यक थी कि पुरानी व्यवस्था सदियों पहले जर्जर हो चुकी है, वरन् इसलिए भी किये कि बिना देष का राजनीतिक आन्दोलन शक्तिषाली नहीं हो सकता थी। इस राजनीतिक आन्दोलन का लक्ष्य क्या हो, से शक्तिषाली कैसे बनाया जाये, षिक्षित युवक सामाजिक क्राँति के लिए कैसे कदम उठायें–इन सब समस्यओं को लेकर निराला ने जो कुछ लिखा था, वह राजनीतिज्ञों के दाँव–पेंच से बहुत आगे की बात थी।
निराला समझौता परस्त राजनीतिज्ञों को फटकारते हैं और ब्रिटिष साम्राज्यवाद को ध्वस्तकरने के लिए प्रेरित करते हैं–

चूम चरण मत चोरों के तू
गले लिपट मत गोरों के हू।

निराला की राष्ट्रीय चेतना के विकास की पराकाष्ठा भारत छोड़ो आन्दोलन (1942) के आस–पास दिखाई देती है। जब किसान संघर्षो, मजदूर आन्दोलनों का प्रसार पूरे देष में था। निराला का स्वप्न इस सम्पूर्ण आन्दोलन को एक सूत्र में पिरोकर एक जनक्रान्ति करना था पर राजनीतिज्ञों की सत्ता प्राप्ति की उत्कट अभिलाषा के कारण देष की जनता को खण्डित और अधूरी आजादी से सन्तोष करना पड़ा। भारत स्वाधीन तो हुआ किन्तु जिस स्वाधीन भारत का स्वप्न निराला देखे रहे थे, वह साकार न हुआ।

सामाजिक संरचना के सन्दर्भ में भी स्वाधीनता गहरा मूल्य रखती है। वर्ण–व्यवस्था आधारित संरचना में जाति–पॉति का भेदभाव और ऊँच–नीच का भेदभाव किसी भी राष्ट्र की उन्नति में बाधक है। निराला इस बात को समझते थे कि देष की गुलामी का एक कारण आपसी भेद–भाव है। सच बात तो यहै कि इसी भेद–भाव ने स्वाधीनता आन्दोलन को कमजोर किया है। वर्ण–व्यवस्था के विरूद्ध निराला का एक प्रिय तर्क यह था कि पराधीन देष के नागरिकों में ने ब्राहमण होते हैं न क्षत्रिय, दास होने के कारण सब समान रूप से शूद्र हो जाते है। पराधीन शासन में सभी भारतीयों का केवल एक धर्म है ि कवह अपने–अपने क्षमता के अनुसार देष की आजादी के लिए संघर्ष करे। इस स्थिति में ने कोई ब्राहमण है और न कोई शूद्र, यदि कुछ है तो देष के निर्माता का एक स्वाधीनता सेनानी। निराला जाति–प्रथा का विनाष और समानता के बिना भारत में राष्ट्रीयता का विकास संभव ही नहीं था।

निराला के संवेदनषील मन को अछतों की शोचनीय व दर्दनायक स्थिति ने कम्पित कर दिया। वे केवल साहित्य की रचना करके ही अस्पृष्यों का साथ नहीं देते बल्कि अपने जीवन में उतारते भी हैं। निराला की विषेषता यह है ि कवे जीवन भर शूद्रा और सवर्णो के बीच की खाई पाटते रहे। निराला ने अपनी कविता ''दलित जनों पर करो करूणा'' में मानव समाज के उन्नयन के लिए ईष्वर से प्रार्थना की है।

दलित जनों पर करो करूणा
दीनता पर उतर आये
प्रभु तुम्हारी शक्ति अरूणा।

निराला के लिए स्त्री स्वाधीनता का प्रष्न राष्ट्रीय स्वाधीनता के प्रष्न में समाहित था। निराला ने लिखा,''प्राचीन शीर्णता के नवीन भारत की शक्ति को मृत्यु की तरह घेरे रखा है। घर की छोटी–सी सीमा में बँधी हुई स्त्रियाँ आज अपने अधिकार, अपना गौरव, देष और समाज के प्रति अपना कर्तव्य सब कुछ भूली हुई है। समाज की मेरूदण्ड नारी है जब तक स्त्रियों में नवीन जीवन की स्फूर्ति नहीं आयेगी, तब तक गुलामी की बेड़ी नहीं तोड़ी जा सकती है। निराला घर–घर की पार्वती को कारा से बाहर निकालकर सत्यं–षिवं–सुन्दरम् की प्रतिष्ठा करना चाहते हैं–

स्वधीनता का एक और सन्दर्भ निराला आर्थिक स्वतन्त्रता से लेते हैं। आर्थिक स्वाधीनता का आषय व्यक्ति की ऐसी स्थिति से है जिसमें वह अपने आर्थिक प्रयत्नों का लाभ स्वंय प्राप्त करें। उसके श्रम का दूसरे के द्वारा शोषण न किया जा सके। निराला की आर्थिक स्वाधीनता की संरचना के तीन आधार हैं– एक शासक वर्ग, दूसरा– जमींदारों एंव पूँजीपतियों का वर्ग, और तीसर–किसान एवं मजदूर का वर्ग। निराला किसानों एवं मजदूरों के जबरदस्त पक्षधर हैं क्योंकि पराधीनता के समय में जो सबसे अधिक शोषित या प्रताड़ित है, वे किसान एवं मजदूर ही है।

निराला इनके समस्याओं के प्रति बेहद संवेदनषील थे। किसानों को जमींदारों के शोषण से मुक्त कराने के लिए उन्होंने व्यक्तिगत रूप से आन्दोलन में भाग लिया था। निराला के लिए क्रॉति की सार्थकता किसानों की मुक्ति में है। अंग्रेजी राज और जमीदारी शासन के दोहरे उत्पीड़न से जो किसानों को मुक्त करे, वही सच्चा क्रॉतिकारी है। 'बादल राग' कृषक मुक्ति की विचारधारा की कविता है–

जीर्ण बाहु है शीर्ण शरीर
तुझे बुलाता कृषक अधीर
ऐ विप्लव के वीर।

निराला पूँजीपतियों एवं मिल मालिकों की शोषण वृत्ति को गहाराई से समझते हैं। इसलिए वे 'भेद कुल खुल जाए' कविता में मिलों में लगी हुई पूँजीपतियों की पूँजी के राष्ट्रीयकरण की बात करते हैं–

भेद कुल खुल जाए वह
सुरत हमारे दिल में हैं।
देष को मिल जाय जो
पूँजी तम्हारी मिल में है।

समग्र रूप से हम कह सकते हैं कि निराला जी वास्तव में भारतीय स्वाधीनता के कवि हैं वे अपनी रचनाओं के माध्यम से ही नहीं वरन् व्यक्तिगत प्रयासों से भी जनमानस में स्वाधीनता के प्रति जागरूक करते हैं। देष को स्वतंत्रता मिले 61 वर्ष बीत गये, संघर्ष की एक मंजिल पर हुई, अंग्रेज यहाँ से चले गये लेकिन देष के करोड़ों पीड़ितों शोषितों और आज के शासन व्यवस्था के पैरों से कुचले जाने वाले करोड़ों लोगो की मुक्ति का सपना अभी अधूरा है। अब जिम्मेदारी निराला के मानस–पुत्रों की है कि वे निराला के सपनों का भारत बनाए।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. राग–विराग, सम्पादक राम विलास शर्मा, लोकभारती प्रकाषक इलाहाबाद संस्करण 1998
2. हिन्दी साहित्य का संवेदना और विकास, राम स्वरूप चतुर्वेदी, लोकभारती प्रकाषन, इलाहाबाद, संस्करण 1999, पृष्ट–122–130
3. हिन्दी साहित्य का इतिहास, विष्वनाथ त्रिपाठी, एन0सी0आर0टी0, 1993,पृष्ठ 115
4. हिन्दी साहित्य का इतिहास, डा0 नगेन्द्र, मयूर पेपर बैक्स, नोयडा, 1992, पृष्ठ–547
5. हिन्दी साहित्यः युग और प्रवृत्तियां, डा0 षिव कुमार शर्मा, अषोक प्रकाषन, दिल्ली, 1995, पृष्ठ–463